।। गुपत नांव सिंवरण को अंग ।।

मारवाडी + हिन्दी

(१–१ साखी)

महत्वपूर्ण सुचना–रामद्वारा जलगाँव इनके ऐसे निदर्शन मे आया है की,कुछ रामस्नेही सेठ साहब राधाकिसनजी महाराज और जे.टी.चांड्क इन्होंने अर्थ की हुई वाणीजी रामद्वारा जलगाँव से लेके जाते और अपने वाणीजी का गुरु महाराज बताते वैसा पूरा आधार न लेते अपने मतसे,समजसे,अर्थ मे आपस मे बदल कर लेते तो ऐसा न करते वाणीजी ले गए हुए कोई भी संत ने आपस मे अर्थ में बदल नही करना है । कुछ भी बदल करना चाहते हो तो रामद्वारा जलगाँव से संपर्क करना बाद में बदल करना है ।

* बाणीजी हमसे जैसे चाहिए वैसी पुरी चेक नही हुअी,उसे बहुत समय लगता है। हम पुरा चेक करके फिरसे रीलोड करेंगे। इसे सालभर लगेगा। आपके समझनेके कामपुरता होवे इसलिए हमने बाणीजी पढनेके लिए लोड कर दी ।

|| अथ गुपत नांव सिंवरण को अंग लिखंते ||

गुपत नांव सिव अमर || सेंस सिंवरे सब जाणे ||
गुपत नाम कबीर || हीर बिणज्या छिप छाने ||
गुपत धऱ्यो ध्रु ध्यान || गरभ साचा सुख ध्यानी ||
सिवरी पद रज पावन || सुध सिलता बन छाणी ||
पीपो धस्यो पाताळ मे || बालमीक क्यूं निर्झरे ||
सुखरामदास साचा सोही || गुपत नाव हिरदे धरे ||१||

इस नाम को गुप्त(लेना चाहिए) । यह नाम महादेव गुप्त लेता था और लेता है । (पार्वती मरते रहती थी । उस पार्वती को)शीव नाम के आधार से अमर है । (यह पार्वती को मालुम नही था ।) शेषनाग पाताल के गुप्त बैठकर स्मरण करता है । (वह वहाँ गुप्त है । परन्तु उसे) सभी लोग जानते है । कबीर ने भी नाम गुप्त लिया । (इन सभी ने)जैसे हीरे का व्यापार गुप्त किया जाता । (मनिहारी के जैसा प्रगट दुकान लगाकर नही किये जाता । वैसे यह नाम गुप्त लिये जाता अन्य नामो के समान प्रगट नही किये जाता । धृव ने वन में जाकर गुप्त ध्यान किया और शुकदेव ने माँ के गर्भ मे ध्यान किया । शबरी के पैर की रज गोदावरी नदी के पानी में डालते ही वह पानी शुद्व और निर्मल हो गया,वह शबरी वन में गुप्त ही रहती थी । उसको कोई भी नही जानता था । पोपा(संत द्वारका में गये तो । लोग से उपहास करने पर)समुद्र में छलांग लगा दी । (उन्हे वहाँ गुप्त श्रीकृष्ण मिला)और बालमीत भी गुप्त ही था ।(उसे कोई भी नही जानता था । श्रीकृष्ण ने यज्ञ में भोजन करने के लिए बुलाया,तब वह सभी को मालुम पडा ।)इसलिए सतगुरू सुखरामजी महाराज कहते है,कि यह नाम हृदय में गुप्त धारण करेगा, वही सत्य है । ।।१।।

सभी जगत जुलमी काळके मुखमे है। काल को सभी जीव उसके मुख मे रखकर जीवो पे जुलुम करनेमे सुख मिलता है । रामनाम यह जीवोको काल से मुक्त कराता है व हर जीव काल से मुक्त होना चाहता है । इसलिये यह रामनाम गुप्त करना चाहिये । (यह रामनाम शंकर व शेष गुप्त लेता है) शंकर व शेष यह रामनाम गुप्त लेते है यह सभी जगत जानता है। कबीर साहबने यह रामनाम गुप्त लिया था । यह रामनाम हिरे समान अमुल्य है । हिरेका बेपारी हिरे का बेपार गुप्त करता है । हिरेका बेपारी हिरो के समान दिखनेवाले नकली कांच की वस्तुओ का जैसा बेपार चलता वैसा प्रगट रुपसे छेटे छेटे मंड्यिो मे बैठकर करने सरीखा नही होता है । ध्रुव ने रामजी का ध्यान किया था । ध्रुव ध्यान करने के लिये चौराहे पे नही बैठा था । घने जंगलमे जहाँ जगतके नर नारीयोका संबंध नही आता ऐसे जगह बैठा था । सुखदेव ने स्मरण गुप्त होने के लिये माता बाद्रायणी के गर्भ मे रामजी का ध्यान किया था । शबरी बनमे गुप्त रहती थी । उसने नाम गुप्त लिया था । उसके नाम प्रतापसे उसके पैर की रज गोदावरी नदी के पानी मे डलते ही गोदावरी

नदी का पानी निर्मल व पवित्र हो गया था । पोपा संत गुप्त स्मरण करता था । पोपा संत निंदकोके शब्दोसे उदास होकर समुद्र मे कुदा था ऐसे पोपा संत को कृष्ण समुद्र मे मिलने गया था । बालमित गुप्त स्मरण करता था । उसे कोई भी नही जाणता था । राजसुय यज्ञ फलीत करने के लिये कृष्ण ने बालमीत को न्योता दिया तब बाल्मीत ग्यानी,ध्यानी, ऋषी,मुनी,राजा,महाराजा एवम् जगत के नरनारीयोको मालुम पडा । इसप्रकार आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है की यह नाम स्मरण जगतमे माया देवी,देवता, खाना पिना ऐसे अनेक प्रकारकी बाधाये खडी कर सकती है यह ध्यानमे रखते हुये नामको हृदयमे धारण कर गुप्त रखना चाहिये । ऐसा जो संत करता है वही सच्चा संत है ।

गुपत दीप घट सबद ।। पवन भै प्रगट जाही ।।
होय रहे उजियाळ ।। भवन भोडळ की नाही ।।
ग्यान मुकर दुर्बीण ।। देख कर बिघन निवारे ।।
बेडा भव जाळ माय ।। भजन भै आपो तां रे ।।
प्रगट नाव नर पत मऱ्यो ।। अर पाय चली प्राक्रम जडी ।।
जन सुखिया बिणजे जतन ।। रतन अमोलक गठडी ।।२।।

यह राम शब्द घट में(गुप्त रखना चाहिए)। जैसे दिपक(गुप्त रखने से)हवा का डर नही रहता है । वैसे ही इस शब्द के प्रगट होने पर डर है । इसलिए इस शब्द को भी घट में गुप्त रखना चाहिए ।(जैसे दिपक को हवा से डर है । इसलिए उसे यदी आले(ताखा)के अन्दर रखे,तो भी उसका प्रकाश घर में होता है।)वैसे ही ज्ञान यह दुर्बीन का शीशा है । उस शीशे से जहाज के आगे आये हुए विहन(मगर,चट्टान या लहर)दिखाई पड जाता है। उस दुर्बीन के शीशे के कारण आये हुए विघ्न दिखाई देने से,निवारण किया जा सकता है । वैसे ही इस भवसागर में ज्ञान के योग से,भजन को भय(अहंकार का),(ज्ञान के योग से भजन) प्रगट मत होने दो । (एक राजा और रानी थे । वे दोनों ही भजन करते थे । परन्तु राजा यह भजन करता,किसी को मालुम नही होने देता था । और रानी भजन करती थी । वह ऐसा समझती थी,की राजा कुछ भजन करता नही । इसलिए वह राजा को कहते रहती की भजन करो । परन्तु राजा उसको कुछ बताता नही था । की मैं भजन करते रहता हूँ । यह रानी को नही बताता था । एक दिन नींद में)राजा के मुख से(राम)नाम का उच्चारण हुआ । (तब वह रानी बहुत उत्सव करने लगी । राजा जगने के बाद यह उत्सव क्यों हो रहा है लोगों से पूछा । तब लोगों ने बताया तुम्हारे मुख से राम नाम निकला,इसलिए रानी उत्सव कर रही है । तब राजा बोला,कि मेरे मुख से राम निकल गया । अब मेरे पीछे रह क्या गया । अब मेरा जीना व्यर्थ है । ऐसा कहकर उस)राजा ने प्राण त्याग दिया । (ऐसी ही चित्रावली गुप्त रहती है ।) यह वल्ली अपने पराक्रम से,पानी में डालते ही पैरे से चलने लगती है ।(और गुप्त हो जाती है ।)सतगुरू

सुखरामजी महाराज कहते है,कि जिसके पास अनमोल रत्न है । वह रत्नों की गठडी गुप्त रखता है । (ऐसे ही शब्द को घट में गुप्त रखना चाहिए ।) ।।२।।

महलमे दिपक हवाके झोले से बुझे नही ऐसी जगह महलमे बचाके रखते है । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज पुछ्ते है की,ऐसे जगह रखने पे भी महल मे पुर्ण उजाला होता है की नही होता है । इसी तरह शब्द गुप्त लेनेसे घटमे सतस्वरुप का प्रकाश होता है । दुर्बीण से जहाज के आगे आये हुये विघ्न मगर,चट्टान,लहर दिखाई पड जाते है व उन विघ्नोसे जहाजको बचाये जाता है । इसीप्रकार नाम वैराग्य ग्यानसे जीवको भवासागरमे डुबोनेवाले अहम भयसे बचाये जाता है । राजा गुप्त स्मरण करता था । यह वह राणीको भी नही बताता था । एक दिन निंदमे राम शब्द मुखसे प्रगट हो गया । यह उसे राणीसे समजा । राजाने बिचार किया की जागृत अवस्था मे तो शब्द लेता हुँ परंतु निंदमे भी उच्चारता हुँ यह अहम न आवे मतलब अहम इस मायाका धोका न होवे इसलिये राजा ने प्राण त्याग दिया । ऐसे ही चित्रावली गुप्त रहती है । यह वल्ली पानी मे डालते ही अपने पराक्रम से पैर से चलने लगती है । वह चलके पानी मे लुप्त हो जाती । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है की जिसके पास अमोलक रत्न है वह रत्नो की गठडी गुप्त रखता है । ऐसे ही अहम भय से बचने के लिये यह शब्द गुप्त रटना चाहिये ।

काळ कुठारा जग बनी ।। बचे गुप्ता जन चंदण ।।
छिपे सिंघ बन बीच ।। पडे पश्वा दिक बंधण ।।
छिपे पनंग मणी काज ।। नाज गुप्ता घर बावे ।।
समज्यां पुरषा सेन ।। सुदंरी ग्रभ दुरावे ।।
गुप्ता भजण गंभीर सर ।। रतन रास बिरोळीये ।।
जन सुखिया जन ज्होंरी ।। हर हिरा मन पोलीये ।।३।।

यह संसार बन के जैसा है । और काल कुल्हाडी जैसा है । इसलिए वे बच जाते है । वैसे ही संत जो संसार में गुप्त रहे वही बचेंगे । वन में सिंह छिपकर रहता है । इसलिए उसे कोई बांध नही सकता है । दूसरे पशु (बैल,घोडे,गाय,भैंस,ऊँट,हाथी आदी पशु)सभी बन्धन में पडते है । और गुप्त रहने से सिंह बन्धन में नही पडता है । (वह सिंह यदी प्रगट हूआ,तो उसे कोई मारेगा या पकड लेगा)। वैसे ही मणीधारी सर्प अपनी मणी के लिए गुप्त रहता है । और हम अन्न जो खेत में बोते है । उसमें से जो दाणे गुप्त जमीन के अन्दर पडेंगे,वही हरे होकर फलेंगे । (परन्तु जो दाणे बाहर पडेंगे ,उसे पक्षी चुनकर खा जायेंगे ।)वैसे ही जो समझे हुए मनुष्य है । वे अपनी भजन गुप्त रखतें है । जैसे स्त्री अपना गर्भ छिपाकर रखती है । ऐसा ही यह गुप्त भजन,गहरे सरोवर में जैसे रत्न की रास रहती है । वैसे रत्न की रासी में से हीरे शोधकर निकालते है । उसी तरह ये संत जौहरी जैसे संतजन,हर नाम हीरे के जैसा मन में गाडकर रखते है । ।।३।।

बन मे अनेक वृक्ष रहते है । उसमे चंदन का भी वृक्ष रहता है । यह अन्य वृक्षोके समान कोई भी कुल्हाडी से तोड सकता ऐसे जगह कभी नही उगता है । इस कारण चंदन का पेड जगत के लोगो के कुन्हाडी से बच जाता है । ऐसे सभी मायाके प्रगट नामधारी जगत के काळ कुन्हाडी से काटे जाते है परंतु गुप्त नाम धारी संत काळ कुन्हाडी से बच जाते है । जगत मे गाय,घोडा,कुत्ता,हाथी,सिंह आदि अनेक पशु है । गाय,बैल,घोडा,कुत्ता ये खुल्ले फिरने वाले पशुओको जगत बांधकर रखता है परंतु सिंह बन मे छुपकर रहने कारण कोई नही बांध सकता है । मणीधारी नाग अपने मणी के लिये धरती मे छिपे रहता है । अन्य साँपो के समान धरती पे जगत के मनुष्योके नजर मे आयेगा ऐसे जगह कभी फिरता नही । अनाज जो खेतमे बोते है उसे धरतीके उदर मे गिरे ऐसा डालते है । जमीन के उपर गीरने नही देते है। उसे पंछी खा जाते है व उससे अनाज नही उगता । इसीप्रकार चतुर नर नारी निजनाम का स्मरण गुप्त करते है । स्त्रि अपना गर्भ जगत से छिपाकर रखती है । ऐसे चतुर संत अपना स्मरण छिपाकर रखते है । गहरे सरोवर मे जैसे हिरे रत्न की रास रहती है वह हिरे रत्न की रास मरजीवा (गोताखोर)खोजकर निकालते है ऐसे ही संत जन माया के नामो मे से मोक्ष देनेवाला हरनाम खोजते है । जैसे जोहरी हिरो को सोने के तारोमे पोकर रखते है वैसे ही संतजन राम नाम को निज मन मे पोकर रखते है ।

भील भवण सुलतान ।। मोल मिसरी का हिरा ।।
बूझत मीन मुराळ ।। मानसर केसो बीरा ।।
बिप्र मुन सुर चिरत ।। बीर बिक्रम सो जाणे ।।
कोई पेस पुतळी लूण ।। समंद को थ्हा बखाणे ।।
डाकण आखर सब कहे ।। पढेस डाकी पाठ मुख ।।
जन सुखिया सेंसार मे ।। ब्रण्यो जाय न ब्रम्ह सुख ।।४।।

भिल को सुलतानने दिये हुये हिरेकी परिक्षा नही थी । इसलीये भिल सुलतानने दिया हुवा हिरा व रंगीत खडी शक्कर का टुकडा नही पहचान पाया । ऐसे ही जगत ग्यानी,ध्यानी हर को नही पहचान पाते है जैसे भिल सुलतानके महलके सुख जगतमे बता नही पा रहा था वैसे ही संत ब्रम्हसुख जगत के लोग तथा माया के ग्यानी, ध्यानीयोको बता नही पाते ।

दाखला ---

एक बादशाह शिकार पर गया और शिकार के जानवर के पीछे घोडा दौडा दिया परन्तु वह जानवर हाथ में आया नही और सायंकाल होकर अंधेरा हो गया । दूसरे साथ के साथी पीछे रह गये । और बादशाह पहाड में भटकने लगा । उसे अपना शहर किधर है,इसकी सुद्धि नही रही और मन में बहुत डरा की,रात को कोई जानवर मुझे खा जायेगा । रास्ता भी वहाँ नही था । वहाँ एक जगह पहाड पर आग देखा । वहाँ कोई मनुष्य होगा,ऐसा

समझा । आग की सीध में चलकर आग के पास आया । वहाँ एक भील की झोपडी थी । वहाँ इस बादशाह के जाने पर भील ने उसका अच्छा सन्मान किया । वह भील बादशाह को यह बादशाह है,ऐसा जानता भी नही था । घर आया हुआ अतिथी समझकर,उस बादशाह का भील ने सन्मान किया । उसे बडी घास आदि बिछाकर बिस्तर लगा दिया और उसे दूध रोटी खाने को दिया और घोडा बांधकर उसके चारे पानी की व्यवस्था की और ठंढक से बचने के लिए आग जला दिया तथा स्वयं रात को जाग कर पहरा दिया । दिन निकलने पर बादशहा घर जाने लगा । तब बादशहा उसके उपर बहुत खुश होकर बोला,तुम कभी मेरे गाँव आओ और बोला की तुमने मेरा प्राण बचाया है । इसलिए तुम मेरे भाई के जैसे हो तब भील ने पूछा कि तुम्हारा नाम क्या है? और तेरी झोपडी कहाँ है? तब बादशहा बोला,लोग मुझे सुल्तान कहते है और पाँच-सात कोस पर जो गाँव दिखाई देता है,वहाँ मैं रहता हूँ तब भील बोला कि,तूं मुझसे छोटा है,इसलिए मैं तुम्हें सुल्तान न बोलकर सुल्तान्या बोलूँगा तब बादशहा ने सोचा यह सुल्तान्या-सुल्तान्या पूछते-पूछते आयेगा,तो इसे कोई भी मेरा घर नही दिखायेगा । इसलिए उसने उसे अपने पास का हीरा दिया व सोने का तीर दिया तथा बोला कि,यह तीर दिखाकर पूछना की,इस तीर वाले का घर दिखाओ)। सोने का तीर बादशहा के अलावा दूसरे के पास नही रहता ।(फिर वह बादशहा अपने नगर को चला आया । आगे कुछ दिनों बाद भील ने सोचा की,मेरा भाई सुल्तान्या को यहाँ से गये हुये बहुत दिन हो गया । तो अब मुझे उससे भेंट करने जाना चाहिए । ऐसा विचार कर निकला और उस शहर में आया,वहाँ रास्ते में उसे हलवाई की दुकान दिखी । वहाँ हलवाई की दुकान पर चमकते हुए खडीशक्कर की थाली देखकर,उस भील ने उस हलवाई को बादशहा का दिया हुआ हीरा दिखाकर बोला,कि यह जो तेरे पास है,वैसा यह मेरे पास भी है । तब वह हलवाई समझा,की यह मुर्ख है । हीरा और खडीशक्कर एक ही समझता है । इसलिए उस हलवाइने भील को बोला,कि यह मूँह में डालकर चूस,तब वह भील मूँह में हीरा डालकर चूसने लगा । तब उसे कुछ भी स्वाद नही मिला और बोला की इसमें तो कुछ भी मिठाई नही है । फिर हलवाई ने खडीशक्कर का टुकडा देकर कहा,की इसे खाओ । तब उस भील ने खडीशक्कर का टुकडा मुँह में डाला और मिठा लगने से नाचने लगा । तब भील खुश होकर हलवाई को बोला,कि तो इसे तूं ले और तेरे पास जो है,मुझे दे । मैं अपने सुल्तान्या भाई को ले जाकर दूँगा ।(हलवाई ने हीरा रख लिया और उसे खडीशक्कर का टुकडा दे दिया ।)वह भील खडीशक्कर का टुकडा लेकर चल दिया और लोगों से पूछने लगा की सुल्तान्या की झोपडी किधर है?तब लोग उससे पूछने लगे,कि सुल्तान्या कौन है?तब वह बादशहा का तीर उन्हें दिखाकर बोला,यह तीर जिस सुल्तान्या का है,उसका घर बताओ । तब लोगों ने तीर देखा तो,यह तीर तो बादशहा का हैं,ऐसा समझकर लोग

उसे बादशहा के पास ले गये । बादशहा उस भील को देखकर बहुत खुश हुआ । और भील के सामने आकर उसका हाथ पकडकर अपने सिंहासन पर साथ मिलकर बैठा । भील के आते ही यह समाचार सारे राजवाडे और जनानखाने तक पहुँच गया । कारण बादशहा ने पहले बताया था,कि भील ने मेरी जान बचायी थी । तब जनानखाने की रानीयाँ भी उस भील को देखने के लिए उत्सुक हो गयी । और मिलने के लिए भील को संदेश भेजा । तब बादशहा के दो कुमार एक लाल मखमल की पोषाख पहने हुए और दूसरा हरे मखमल की पोषाख पहनकर,ऐसे दो राजकुमार आये और भील को बाबा-बाबा कहने लगे और बोले,कि हमारी माँ तुम्हे मिलने के लिए बुला रही है । उस भील ने हरे कपडेवाले कुमार का नाम हर्या और लाल कपडेवाले का नाम लाल्या रखा । और बोला की में सुल्तान्या को लायी हुयी वस्तु दे देता हूँ ,फिर आता हूँ । ऐसा बोलकर भील ने खडीशक्कर का टुकडा बादशहा को देकर बोला,कि तुमने जो मुझे टुकडा दिया था,उसमें कुछ भी मिठाई नही थी । परन्तु मैंने देखो कैसी मीठी वस्तु लायी है । बादशहा ने देखा तो,ओ टुकडा खडीशक्कर का था । तब बादशहा ने पूछा मेरा दिया हुआ हीरा कहाँ है? तब भील बोला की मैंने एक आदमी को ठग कर वह तेरी खराब वस्तु दे दी और उसके पास की कैसी अच्छी वस्तु ले आया हूँ । तब बादशहा बोला की तूँ किसे ठग आया है । तब उसने उस हलवाई की दुकान दिखा दी । और बादशहा ने अपना हीरा उस हलवाई के यहाँ से मँगा लिया । फिर भील रानीयों के पास गया । पहले महल की रानी नथ पहनकर बैठी थी । वो बोली आओ देवरजी राम-राम । तब वह भील बोला राम-राम ए नाथी । दूसरी रानी टिकली लगाकर बैठी थी । वह उसके अज्ञानता को देखकर हँस दी । तो उसको बोला की किसलिए हँसी टिकली? इस प्रकार वह पुन: राजा के पास आया । वहाँ अनेक प्रकार के भोजन करते हुए और राजमहल का,राजवाडे का ऐश आराम का सुख भोगते हुए,कुछ दिन रहा । और पुन: अपनी झोपडी में आया । वे राजभवन के देखे हुए सुख,वह अपने लोगोंके सामने वर्णन नही कर सका । इसी तरह संत ब्रम्हका सुख पाकर भी जगत को समजे,ऐसे शब्दो मे वर्णन नही कर सकते । जैसे एक राजहंस एक पानी के गड्ढे के पास आया । वहाँ उस गड्ढे में एक मछली थी । उसने उस हंस से पूछा,कि तुम कौन हो? और कहाँ से आये हो? तब हंस बोला,मैं राजहंस हूँ । और मानसरोवर में रहता हूँ । तब वह मछली ने पूछा,की तुम्हारा मानसरोवर कितना बडा और कैसा है? तब राजहंस बोला,की बहुत बडा है । तब मछली ने एक छलांग लगाकर बोली,इतना बडा है? तब राजहंस बोला नही । मछली दूसरी छलांग लगाकर बोली,इतना बडा है क्या? तब राजहंस बोला,नही-नही बहुत बडा है । फिर तिसरी छलांग लगाकर मछली बोली,कि अब इससे बडा क्या होगा? तो उस मछली को हंस क्या समझाये? वैसे ही जो संतजन ब्रम्ह सुख में गर्क हो गये है । वे संसार में ब्रम्ह का सुख कैसे वर्णन

कर सकते? ब्रम्ह सुख का वर्णन करना असम्भव है । जैसे)देवताओं का चरीत्र विक्रम राजा जानता था । एक ब्राम्हण देवताओं का चरीत्र देखकर आया और उसने यहाँ सभीसे बोलना छोड दिया । वह घटना इस तरह की बनी । एक ब्राम्हण का लडका था । वह काशी जाने के लिए निकला । जंगल में एक नदी पडी । उस ब्राम्हण ने सोचा,यहाँ संध्या स्नान करके फिर आगे चले,इसलिए ब्राम्हण ने सोचा अपना सामान नदी के किनारे रखकर,स्नान करने के लिए नदी में छलांग लगाया । वह पानी में नीचे गया,तो नदी के तल में एक दरवाजा मिला । वह दरवाजा खोलकर अन्दर गया । वहाँ उसे एक बडा बगीचा दिखाई दिया । और एक महल दिखाई दिया । उस महल में कोइ नही था । परन्तु पलंग आदी बिछाये हुए पडे थे । वह ब्राम्हण बगीचे के फल पेटभर खा के पलंग पर सो गया । तिसरे पहर इन्द्र की अप्सरायें वहाँ आयी । वे बगीचे में घूमकर वहाँ महल में आयी । वहाँ वह ब्राम्हण सोया था । उसे देखकर यह यहाँ कैसे आया ? फिर एक परी वहाँ रहकर,बाकी सभी परीयाँ इन्द्र लोक में चली गयी । कुछ समय बाद वह ब्राम्हण जागा और उस परी को देखकर मोहित हो गया । उनमें देखते देखते ही प्रेम संचार होकर दोस्ती हो गयी । वहाँ परी प्रतिदिन बगीचे में आती थी और इन्द्र लोक को चली जाती थी । एक दिन ब्राम्हण ने परी से पूछा,कि तुम प्रतिदिन कहाँ जाती हो? वह बोली की हम इन्द्र लोक की परीयां है । हमें प्रतिदिन इन्द्र के दरबार में नाचने के लिए जाना पडता है । तब ब्राम्हण ने इन्द्र लोक कैसा है ये सब पूछा और बोला मुझे भी इन्द्र लोक में ले चलो और इन्द्र की सभा दिखाओ । तब वह परी बोली की, वहाँ मनुष्य नही जा सकता है । फिर इसने हट्ठ पकड लिया,की तुम कैसे भी ले चल,तब उस परी ने उसे भ्रमर बनाया । अपनी(चोली)में डालकर इन्द्र लोक को गई । वहाँ नाचने की धुन में लगकर भँवरे को(ब्राम्हण को)भूल गयी । तब उस ब्राम्हण ने सोचा इसने मुझे इन्द्र लोक में लाकर कुछ भी नही दिखाया । यह मुझे भूल गयी होगी । इसलिए इसे याद दिलानी चाहिए । इसलिए उस भ्रमर रूपी ब्राम्हण ने उस परी को काटा । तब उस परी को भवरे की याद आकर अचानक नाच में ढीलाई हो गयी । और नाचने का ताल बहक गया । तब इन्द्र बोला,की इस परी को क्या हुआ है? क्यों की नाचते–नाचते एकदम ढीलाई हो गयी । उससे एकदम रंग का बेरंग हो गया । इसलिए अश्विनी कुमार को बुलाकर,इसको क्या रोग हुआ है, इसका निदान करो । तब वह अश्विनी कुमार इसका निदान बताये,कि इसे कोई रोग नही हुआ है । इसे इच्छा विरह की व्यथा उत्पन्न हुयी है । तब उस परी की जाँच करके देखी,तो उसके चोली में भ्रमर निकला । तब इन्द्र ने उस परी से पूछा,की यह तुम कहाँ से लायी? तब वह परी बोली,मैं फूल तोडने के लिए बाग में गयी थी । वहाँ यह मेरे कपडे में आ गया । तब इन्द्र ने उसे कपट खण्डन सरोवर में धोने का आदेश दिया ।(उस कपट खण्डन सरोवर के पानी का ऐसा गुण है,कि उस पानी का स्पर्श होते ही,कपट खण्डन

होकर सारी सत्य बात स्पष्ट हो जाती है । ऐस कपट खण्डन सरोवर इन्द्र लोक में है ।)उस सरोवर में इस भवरे को डालते ही मनुष्य हो गया । और उस ब्राम्हण को इन्द्र के सामने लाकर खडा किया । तब इन्द्र ने उस ब्राम्हण से पूछा,की तुम यहाँ क्यों आये हो?तब वह ब्राम्हण डरते-डरते,कांपते-कांपते बोला, की में आपके दर्शन के लिए आया हूँ । तब इन्द्र ने यह कपट देखकर उस ब्राम्हण को पृथ्वी पर फेंक दिया । फिर वह ब्राम्हण घूमते-घूमते रास्ता पूछते हुए,अपने गाँव आया परन्तु वह ब्राम्हण देवताओं का चरीत्र देखकर आया था । इसलिए उसे यहाँ के कोई पदार्थ और स्त्री ध्यान में नही आता था । इसलिए उसने सभी से बोलना छोडकर,उस ब्राम्हण ने मौन धारण किया । खाना पिना छोड दिया । उसका मन रात-दिन देखे हुए देवताओं के चरीत्र में घूम रहा था । वह अपनी स्त्री से भी नही बोलता था । इसलिए वह रात दिन रोती रहती थी । दूसरे लोगों को इसकी हकीकत मालुम नही थी । वहाँ(उज्जयनी में)विक्रम राजा राज्य करता था । यह विक्रम राजा परदु:ख काटनेवाला था । वह राजा अपने राज्य में कोई दुखी है क्या? इसकी जाँच करने के लिए वह रात को घूमा करता था । एक दिन घूमते-घूमते,उस ब्राम्हण के घर के पास आया । तब वहाँ ब्राम्हण की पत्नी रो रही थी । तब विक्रम राजा ने विचार किया की कोई भी किसी दु:ख के बिना नही रोता है । तो इसके दु:ख की कल यहाँ आकर चौकशी करनी चाहिए । ऐसा विचार कर वह राजा उसके घरपर निशान लगाकर,राजवाडे में आ गया । दूसरे दिन वह विक्रम राजा उस ब्राम्हण के घर आकर,उस ब्राम्हणी से पूछने लगा कि तुम रात में क्यों रोती थी? ब्राम्हणी बोली,मेरा पती विद्या अध्ययन करने के लिए गया था और पुन: यहाँ आया,तो वह किसी से बोलता नही है और कूछ खाता-पिता भी नही है । इसी दु:ख से मैं रोती हूँ । तब विक्रम राजा उस ब्राम्हण से बोला,कि तुम क्यों ऐसा हुए हो,मुझे सब मालुम है,कारण कही तो भी तुम)देवताओं का चरीत्र(देखकर आया है । इसलिए यहाँ तुम्हे कुछ भी अच्छा नही लगता है । तो तुमने क्या देखा है । वह मुझे बताओ । जिससे मैं तुम्हारा दु:ख निवारण करूँगा । तब उस ब्राम्हण ने सारी घटना बता दी । फिर विक्रम राजा बोला,तुम मेरे साथ चलो । जहाँ स्नान के लिए जिस नदी में तूं गया था । वह जगह मुझे दिखा । फिर वे दोनों जिस जगह ब्राम्हण स्नान करने के लिए गया था,वहाँ आये और ब्राम्हण ने बताया यही मैने पानी में छलांग लगाई थी । फिर विक्रम बोला,एक बार फिर छलांग लगाओ । ब्राम्हण पानी में छलांग लगाया,तो उसके पीछे विक्रम राजा ने भी छलांग लगायी । उसे पहले जैसा ही दरवाजा मिला और वे दरवाजा खोलकर अन्दर गये । तो वहाँ बगीचे में महल था । वे दोनों महल में जाकर बैठे । तिसरे प्रहर अपने समय पर वह अप्सरा वहाँ आयी । और दोनों को देखकर खुष हुयी । तब विक्रम राजा बोला,हम दोनों अब तुम्हारे साथ इन्द्र लोक में चलेंगे । वे दोनो ही(विक्रम और ब्राम्हण)परी के विमान पर बैठकर इन्द्र लोक में

गये । वहाँ जब नाच शुरू होने लगा,तब विक्रम राजाने तबलची के पास से तबला ले लिया । तुम्हे अच्छा तबला बजाना नही आता । तबला मैं बजाता हूँ । ऐसा बोलकर,तबला बजाने लगा । राजा ने तबला बहुत ही अच्छा बजाया । इसलिए नाच में बहुत रंग आया । तब इन्द्र बहुत खुश होकर उस अप्सरा से बोला,कि तुमने आज नाच बहुत अच्छा किया,इनाम माँगो । तब वह अप्सरा बोली,की इनाम इस तबलेवाले को ही दो । इसने तबला बहुत ही अच्छा बजाया,इसलिए नाच में बहुत रंग आया । तब इन्द्र ने विक्रम राजा को(विक्रम राजा गन्धर्व सेन का पुत्र और इन्द्र का नातू था । यह गन्धर्व से पुर्व में इन्द्र के श्राप से गधा हो गया था । उस गधे से विक्रम राजा भर्तृहरी और इनकी बहन मैनावती की उत्पत्ती हुयी।)बुलाकर इनाम माँगने के लिए कहा । तब विक्रम ने इन्द्र से कहा,कि यह अप्सरा इस ब्राम्हण के लडके को दे दो । फिर इन्द्र ने ब्राम्हण के लडके को अप्सरा दे दी ।)(जिस तरह से ब्राम्हण देवताओं का चरीत्र देखकर आया और यहाँ बता नही पाया । उसी तरह ब्रम्ह का सुख यहाँ बताते नही आता । जैसे नमक की पुतली समुद्र का थाह लगाने गयी । वह जाते जाते समुद्र में गल गयी । तो वह समुद्र कितना गहरा है । यह थाह बतानेके लिये,नमक की पुतली बाकी ही नही रही याने सागरके पानीमे मिलके , पानी बन गयी । इस प्रकार ब्रम्हके सुखमे लिन हुये संत ज्ञान बैरागी बन गये । ब्रम्हके समान हो गये । ब्रम्हमे संसारके सुख ही नही है व जगत संसारके सुखोको जानता,ब्रम्ह सुख नही जानता,इसलिये वह संत जगतको वहाँके ब्रम्ह सुख,मायाके शब्दोमे बता नही सकता । डाकन अक्षर सभी कहते है पंरतु जिसने डाकीनीका मंत्र विधीपुर्वक पढा है,उसमे ही डाकीनीका गुण प्रगटता है । वैसेही ब्रम्ह ब्रम्ह सभी कहते है पंरतु जिसने ब्रम्ह विधी प्रगट की है,उसेही ब्रम्ह सुख समजता है । अन्य मायावी विधीयाँ करनेवालोको,ब्रम्ह सुख नही समजता ऐसा आदी सतगुरु सुखरामजी महाराजने कहाँ है । ।।४।।

सब्द घोर लिव बरत ।। सुरत नटणी ज्यूं लोटे ।।
उडी गुडी असमान ।। बंधी लव बोरूं उलटे ।।
क्रम कूप लव नेज ।। कळस मन क्रसण पावे ।।
पडे से निकसे नाय ।। बंधीलव होरूं आवे ।।
पाप लोह पिंजर जडयो ।। म्रजीवा समंदां झुरे ।।
जन सुखिया भव सिंध मे ।। लव बंध्या नौका तिरे ।।५।।

शब्द यह एक नाद है । (नट की ढोल की आवाज के शोर जैसा यह शब्द का नाद है ।)और शब्द की लव लगानी एक डोर है । और यह सूरत नटनी है । जैसे नटनी डोर की आधार से उपर जाती है और नीचे आती है । वैसे सूरत भी लव पर आते जाते रहती है । जैसे पतंग आकाश में उडती है । वह पुन: डोर की आधार से नीचे खींची जा सकती है । (वैसे ही शब्द में बांधी हुयी लव आधार से सूरत शब्द में आती–जाती है ।)जैसे कर्म

रूपी कुँआ है । और लव यह एक डोर है । और मन यहा पानी निकालने का बर्तन है । ये तीनों होने पर पानी निकालकर खेत में पानी दिया जा सकता है । परन्तु डोर टूटकर पानी का बर्तन कुँए में गिर जाने पर,वह फिर अपने आप डोर के बिना निकलता नही । तो वह बर्तन डोर की सहायता से निकालने पर ही निकलेगा । वैसे ही लव और नाद इससे बांधी गयी सूरत लौटकर आती है । परन्तु लव रूपी डोर टूटने पर,मन रूपी बर्तन कर्म रूपी कुँए में गिरता है ।(मन यह कर्मो में पडता है।)जैसे पाप रूपी लोहे के पिंजडे में बैठकर पनडुब्बी समुद्र में जाता है । उस पिंजडे को डोर बांधे रहनेसे,वह पिंजरा पुन: निकल जा सकता,ऐसे ही भवसागर में लव का बांधा हुआ नौका जैसे पार होता है ।

जैसे नटणी नट के बाजोके आवाज पे रस्सी पे इधर से उधर व उधर से इधर आती जाती वैसे ही संत की सुरत शब्द के आवाज के लिव से आते जाते साँस पे आती व जाती । जैसे पतंग आकाश मे उड्ती वह डोर के आधार से निचे उपर खिंचे जाती वैसे ही शब्द मे बंधी हुयी लिव आते जाते साँस पे चलते रहती ।

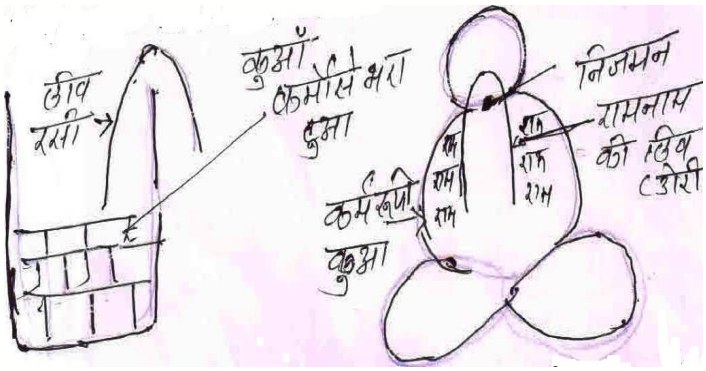

कर्म याने माया काल रुपी कुआँ है हर यह रामनाम रुपी पाणी है रामनाम की लीव एक रस्सी है । मन यह पानी भरके लानेका बरतन है परंतु यह रस्सी टुट जाने पे याने साहेब से लिव निकल जानेसे मन कर्म रुपी माया मे पड जाता है । वह फिरसे कुआँ रस्सी व बरतन होनेपे खेतको पाणी दिया जा सकता याने घटमे नाम प्रगट करते आता था । ये तीनो होनेपर पाणी निकालकर खेत मे पानी दिये जाता है परंतु डोर तुटकर पानी निकालनेका बर्तन कुअे मे गिर जानेपर वह फिर अपने आप डोर के बिना निकलता नही । वह बर्तन डोर के सहाय्यता से निकालने परही निकलेगा । याने विषयो मे व मायाके करणीयो मे गया हुआ मन साहेब से लिव रखनेसे ही कालसे निकल सकता ।

|| इति गुपत नांव सिंवरण को अंग संपूरण ||